

पछेलना स.क्रि. (देश.) 1. पीछे छोड़ना, पीछे करना
2. आगे बढ़ना।

पछेला पुं. (देश.) 1. हाथ में पहने जाने वाले अनेक कड़ों में से एक जो सबसे बड़ा और पीछे होता है और पीछे पहना जाता है 2. स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा जिसमें कुछ दाने उभरे रहते हैं वि. पिछला।

पछोड़ना स.क्रि. (देश.) 1. सूप में रखकर गेहूँ-चावल आदि को साफ करना, झाड़ना, फटकारना, फटकना।

पजमुर्दगी स्त्री. (फा.) 1. उदासीनता, खिन्नता 2. कुम्हलाहट।

पजमुर्दा वि. (फा.) शिथिल, उदास, मुरझाया या कुम्हलाया हुआ।

पजारना स.क्रि. (फा.) जलाना।

पजावा पुं. (फा.) 1. ईंटे पकाने का भट्ठा, आवाँ, चूना पकाने का भट्ठा।

पजरूण पुं. (देश.) जैन मत में प्रचलित एक प्रकार का व्रत, तीर्थंकरों की सेवा या पूजा।

पजोखा पुं. (देश.) किसी की मृत्यु पर उसके संबंधियों और मित्रों द्वारा शोक संवेदना तथा शोक प्रकट करना, मातमपुरसी करना।

पज्ज पुं. (तत्.) शूद्र।

पज्जलिका पुं. (तद्.) 1. छंद शास्त्र का एक मात्रिक छंद, इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं तथा 8 वीं और छठी मात्रा पर एक-एक गुरु होता है।

पटंबर पुं. (तत्.) 'पाटांबर' रेशमी कपड़ा, कौषेय (कौशेय)।

पट पुं. (तत्.) 1. वस्त्र, कपड़ा 2. परदा, आवरण यथा- चित्रपट 3. द्वार या दरवाजा यथा- पालकी का पर्दा, घर के पट 4. पहनने के कपड़े, पोशाक 5. कुश्ती का एक दाँव या पेंच 6. लकड़ी या धातु का सपाट एवं चिकना टुकड़ा या चपटी पट्टी

जिस पर चित्र या लेख खुदा हो यथा- ताम्रपट 7. किसी छोटी वस्तु के गिरने से होने वाली आवाज जैसे- पट-पट बूँदे गिरना आदि मुहा. 1. पट उघड़ना- दर्शन हेतु मंदिर के पट खुलना; पट खुलना- मंदिर के दरवाजे खुलना; पट बंद होना- मंदिर के दरवाजे बंद होना, दर्शन का समय बीत जाना; पट लेना- पट नामक पेंच से कुश्ती में अपने प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ने हेतु उसकी टाँगें अपनी ओर खींचना; पट पड़ना- औंधे मुँह पड़ना, लेटना; (तत्.) भूमि की ओर पेट करके लेटना, पीठ आसमान की ओर करना, चित्त का विपरीत; चित भी मेरी, पट भी मेरी- दोनों कार्यों में लाभ लेना; चट-पट करना- तुरंत, तत्काल; चट मंगनी-पट ब्याह- शादी ब्याह का कार्य तुरंत हो जाना।

पटइन स्त्री. (देश.) पटवा जाति की स्त्री, गहने गूँथने वाली पटवा स्त्री।

पटक पुं. (तत्.) 1. सूती कपड़ा 2. खेमा, तंबू 3. शिविर 4. आधा गाँव, अर्द्धग्राम।

पटकन स्त्री. (तद्.) 1. पटकने की क्रिया या भाव 2. छड़ी 3. तमाचा।

पटकना स.क्रि. (तद्.) 1. किसी वस्तु या व्यक्ति को उठाकर जोर से पृथ्वी पर गिराना या डालना 2. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को उठाकर पृथ्वी पर पटकना, पछाड़ना 3. प्रतिद्वंद्विता के किसी भी क्षेत्र में पछाड़ना जैसे- राजनीति में हराकर पटकना यथा- बरतन पटकना, हाथ पटकना, बच्चे को पटकना या पहलवान को दो-तीन बार पटकना।

पटकनिया स्त्री. (देश.) 1. पटकने की क्रिया या भाव 2. भूमि पर पटके जाने, गिरकर पछाड़ खाने की क्रिया।

पटकनी स्त्री. (देश.) 1. पटकने की क्रिया या भाव 2. पटके जाने की क्रिया या भाव 3. भूमि पर गिरकर पछाड़ खाने की क्रिया।